ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी
के 136वें निर्वाण दिवस पर
कृतज्ञ राष्ट्र का शत्-शत् नमन

वर्ष 42, अंक 48 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 अक्तूबर, 2019 से रविवार 27 अक्तूबर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

136वें निर्वाण दिवस (दीपावली - 27 अक्तूबर) पर विशेष

आईए, ऋषि निर्वाण दिवस पर मिलकर लें संकल्प

ऋषि के मिशन को पूरा करेंगे, ऋषि के स्वप्न को पूरा करेंगे

संसार एक ऐसी घाटी है जहां हर क्षण, हर पल नित-नूतन घटनाओं का प्रवाह अनवरत बहता रहता है। किंतु इस सारे घटनाक्रम में द्वंद्व दिखाई देता है। एक तरफ जन्म-जीवन और

जलाओ दीये पर, रहे ध्यान इतना।
धरा पर अंधेरा, कहीं रह न पाए।।

दूसरी तरफ मृत्यु, एक तरफ सृजन तो दूसरी तरफ विध्वंश, एक तरफ अंधेरा तो दूसरी तरफ प्रकाश, एक तरफ मानवता तो दूसरी तरफ दानवता, एक तरफ प्रेम-करुणा दया सेवा-सहयोग परोपकार की भावना तो दूसरी तरफ स्वार्थ, छल-कपट-धोखा और फरेब के जाल, किंतु सार में कहा जाए तो इस द्वंदमय संसार प्रवाह में निरंतरता अवश्य बनी रहती है।

आर्य समाज के संस्थापक, युग प्रवर्तक, समाज सुधारक, लोकोपकारी, महान वेदज्ञ महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन काल में कदम-कदम पर अनेकानेक घटनाएं घटित हुईं। महर्षि दयानंद सरस्वती 19वीं शताब्दी के ऐसे महामानव हुए जिनके नाम के साथ कोई भी विशेषण या अलंकार सदैव छोटे ही प्रतीत होते हैं। श्री अरविंद ने एक निबंध में ऋषि दयानंद के नाम के साथ कोई भी विशेषण न लगाते हुए यह कहा था कि दयानंद जी का नाम अपने आप में इतना परिपूर्ण है कि अगर हम उसके आगे या पीछे कुछ भी जोड़ते हैं तो उचित नहीं लगता। लेकिन ऋषिवर प्रेम और करुणा की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे, ऋषिवर प्राणीमात्र का भला चाहने और करने वाले महान दिव्य विराट, विशाल और महान विभूति थे। ऋषि के जीवन में घटित होने वाली हर घटना से उन्होंने मानव मात्र के कल्याण की राह दिखाई। जिस समय ऋषि दयानंद ने सच्चे शिव की खोज आरंभ की तो उसमें भी जगत के उद्धार की भावना थी। अंधेरों में प्रकाश की खोज थी, ऋषि का गृह त्याग भी मानव समाज को सुख-शांति से घरों में बसाने के लिए था। ऋषिवर निर्जन वनों में, साधु-संन्यासियों के बीच-बीच जहां-जहां भी गए, लोगों ने उनके साथ जैसा चाहा वैसा व्यवहार किया, फिर भी उनके मन में सबके कल्याण की भावना ही प्रबल थी।

ऋषिवर ने भारत भ्रमण के दौरान हर तरह के घटनाक्रम को ध्यान से देखा-जाना और अनुभव किया कि संसार में गहरा अंधेरा है, दिन के उजालों में भी अंधेरा और रात्रि के प्रवाह में भी अंधेरा। इस अंधेरे को केवल सूर्य की किरणें तिरोहित नहीं कर सकती, यह तो अज्ञान-अविद्या का घोर तम है, इसका तिरोहण तो वेद ज्ञान से ही संभव है। ऋषिवर मथुरा में गुरुविरजानंद दंडी जी की शरण में गए। यह भी विश्व के इतिहास की एक प्रमुख घटना है। ऋषिवर ने द्वारा खटखटाया तो भीतर से आवाज आई कि कौन हो? ऋषि ने कहा यही तो जानने आया हूं कि मैं कौन हूं? गुरु और शिष्य दोनों ने एक-दूसरे को पहचान लिया और एक नए युग परिवर्तन की अविरल धारा प्रवाहित होने लगी। गुरु शिष्य परंपरा के इतिहास में ऋषि दयानंद और गुरु विरजानंद दोनों अमर हो गए।

गुरु विरजानंद जी ने गुरु दक्षिणा में जो कुछ अपने शिष्य ऋषि दयानंद से मांगा उसे सब जानते हैं, लेकिन देने वाले दयानंद ने इतनी त्याग भावना से सर्वस्व समर्पण किया कि सूर्य की तरह बिना किसी भेद भाव के संपूर्ण मानवता को जगाकर रख दिया। पूरे भारत में ऋषि ने वेद ज्ञान की अमृत किरणों से एक नए सवेरे का उदय किया। धरा पर फैले हुए अंधेरों को वैदिक ज्ञान के तर्क-प्रमाण और युक्ति से दूर भगाया। मानव समाज में जो अज्ञान-अविद्या के कारण कुरीतियों का अंधेरा था, धीरे-धीरे छंटने लगा, चार वर्ण, चार आश्रम की वैदिक व्यवस्था कायम होने लगी, ऋषिवर ने कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचनाकर संपूर्ण विश्व को आलोकित किया। इसी तरह ऋषि ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका से लेकर सारे ग्रंथ मानव समाज के अंधेरों को दूर भगने वाले सिद्ध हुए। इन समस्त ग्रंथों की रचना के पीछे ऋषिवर का मानव कल्याण का संकल्प ही तो था। ऋषि ने तो सैंकड़ों शास्त्रार्थ किए और जगत को बताया कि ईश्वर उपासना की सही विधि क्या है, ढोंग-पाखंड, तंत्र-मंत्र और झूठे आडंबरों में मानवता त्राहि-त्राहि कर रही थी, सब को सुमार्ग दिखाने वाले ऋषि ने निर्भीक होकर समाज की आंखों से अज्ञान का पर्दा हटाया। सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा उद्धार, नारी शिक्षा, जात-पात, छुआछूत, भेद भाव के भंवर जाल से समाज को निजात दिलाने वाले, स्वयं जहर पीकर सबको अमृत बांटने वाले, त्याग-तपस्या, साधना और संयम में हिमालय जैसे ऊंचे और महान ईश्वर भक्ति में समुद्र जैसी गहराई-गंभीरता बरतने वाले ऋषिवर ने सत्य का ऐसा उजाला किया कि संपूर्ण विश्व में सदियों के बाद एक नया सवेरा आया।

1875 में ऋषिवर ने मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की और चारों तरफ उजाला हो गया। आर्य जगत में ऋषि के उपकारों को याद करते हुए कवि हृदय गाने लगे-

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महामन्त्री एवं वरिष्ठ आर्य संन्यासी

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी का निधन

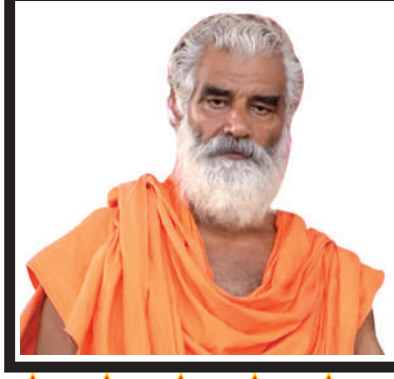

आर्य जगत में शोक की लहर

आर्यजगत के तपोनिष्ठ मूर्धन्य संन्यासी, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महामन्त्री एवं गुरुकुल पूठ के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती का दिनांक 23 अक्तूबर, 2019 को हृदयाघात से मुरादाबाद के तीर्थंकर महावीर अस्पताल में निधन हो गया। उनका जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित था। **ऐसे महान संन्यासी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि - शत-शत नमन्।**

सम्पादकीय

बंट रही हैं संत की उपाधियां : किस-किस को चाहिए?

मदर टेरेसा, सिस्टर अल्फोंसा के बाद अब नन मरियम थ्रेसिया को संत की उपाधि मिली है। देखा जाये तो इस समय वेटिकन के पॉप को अपने भगवान यीशु से अधिक भारतीय उपमहाद्वीप दिखाई रहा है जिस तरह एक के बाद एक नन को वेटिकन की ओर से संत उपाधि बांटी जा रही है उसे देखकर लगता है कि वेटिकन मिशनरी भारत में ईसाइयत की कोई बड़ी फसल काटने को तैयार है। हाल ही में पोप फ्रांसिस ने वेटिकन में नन मरियम थ्रेसिया को संत की उपाधि देने की घोषणा की। 26 अप्रैल, 1876 को केरल के त्रिशूर जिले में जन्मीं सिस्टर मरियम 50 साल की उम्र में 8 जून 1926 को दुनिया को छोड़ गई थीं। उनकी मौत के 93 साल वर्ष बाद उन्हें संत की उपाधि से नवाजा जा रहा है। कहा जा रहा है महिलाओं की शिक्षा के लिए किये गये कार्यों के लिए उन्हें यह उपाधि दी जा रही है। लेकिन असल सच है कि बेहद अमीर परिवार में जन्मी सिस्टर मरियम ने होली फैमिली नाम की एक धर्मसभा की स्थापना की थी और वेटिकन सिटी में मौजूद एक दस्तावेज के मुताबिक, उन्होंने कई स्कूल, हॉस्टल, अनाथालय और कॉन्वेंट बनवाए और संचालित किए। 1914 में उनके द्वारा स्थापित इस संस्था में आज करीब 2000 नन हैं जो भारत में ईसाइयत का विस्तार कर रही है।

असल में संत घोषित करना एक किस्म से चंगाई सभा का दूसरा रूप है। क्योंकि सिस्टर मरियम को संत इस कारण घोषित किया कि नौ महीने से पहले जन्मा एक बच्चा जिंदगी और मौत से जूझ रहा था। डॉक्टरों ने एक विशेष वेंटिलेटर के जरिए एक खास दवा देने के लिए कहा था जो उस समय हॉस्पिटल में मौजूद नहीं थी। बच्चा जब सांस लेने के दौरान हांफने लगा तब बच्चे की दादी ने उसके ऊपर एक क्रोस चिह्न रखकर सभी लोगों से सिस्टर मरियम की प्रार्थना करने के लिए कहा। ऐसा करने के 20 से 30 मिनट के अंदर ही बच्चा एकदम स्वस्थ हो गया। क्या 21वीं सदी में किसी को चमत्कारों के आधार पर संत घोषित करना तर्कसंगत है, क्या तर्क और विज्ञान के युग में ये अंधविश्वास को बढ़ावा देना नहीं है? लोगों का कहना है कि जब विज्ञान मंगल पर जीवन तलाश रहा हो और टेक्नोलॉजी नित नई ऊंचाइयों को छू रही हो तो ऐसे में आज भी चमत्कार जैसी बातों को मानना निश्चित तौर पर आस्था और अंधविश्वास को बढ़ावा देना ही है। साथ ही आलोचक चर्च की उस प्रक्रिया पर भी सवाल उठाते हैं जिसमें किसी बीमार व्यक्ति के ठीक होने को चमत्कार मान लिया जाता है।

क्या वेटिकन का पॉप इतनी हिम्मत रखता है कि एक आदेश जारी करे कि यूरोप में चल रहे सभी अस्पताल और स्वास्थ्य केन्द्रों को बंद करके उनकी जगह सिस्टर मरियम की प्रार्थना शुरू करा दी जाये। सोचिए जब एक प्रार्थना में अधमरा बच्चा तुरंत ठीक हो सकता है तो खांसी जुकाम और बुखार जैसे रोग तो सेकंडों में ठीक हो जायेंगे! लेकिन इन चमत्कार के दावों पर इसलिए भी यकीन करना मुश्किल है कि इनकी कभी कोई चिकित्सीय व्याख्या नहीं की जा सकती और इन्हें चमत्कार मानने का आधार बस आस्था होती है। ऐसे में महज अंधविश्वास के आधार पर किसी बात को चमत्कार मानकर किसी को संत की उपाधि देना खुद-ब-खुद सवालों के घेरे में आ जाता है।

याद कीजिए थोड़े समय पहले केरल में जन्मी सिस्टर अल्फोंसा को पोप बेनेडिक्ट सोलहवें ने सेंट पीटर्स स्पयर में आयोजित एक भव्य समारोह में उन्हें भी यह उपाधि प्रदान की थी। और विडम्बना देखिये कि इस समारोह में एक भारतीय सरकारी प्रतिनिधि मंडल के अलावा लगभग 25,000 भारतवंशी शामिल हुए थे। तब इनकी सेवागाथा का सेकुलर मीडिया बड़े गर्व से गुणगान किया था। लेकिन क्या वास्तव में धड़ाधड़ संत की उपाधि से नवाजी जा रही एक के बाद भारतीय ननों का मिशन सेवा ही था? गौर करने वाली बात है मिशनरी ऑफ चौरिटी संस्था की स्थापना करने वाली टेरेसा ने अपना पूरा जीवन भारत में बिताया, लेकिन जब भी पीड़ित मानवता की सेवा की बात आती थी तो टेरेसा की सारी उदारता प्रार्थनाओं तक सीमित होकर रह

.....क्या वेटिकन का पॉप इतनी हिम्मत रखता है कि एक आदेश जारी करे कि यूरोप में चल रहे सभी अस्पताल और स्वास्थ्य केन्द्रों को बंद करके उनकी जगह सिस्टर मरियम की प्रार्थना शुरू करा दी जाये। सोचिए जब एक प्रार्थना में अधमरा बच्चा तुरंत ठीक हो सकता है तो खांसी जुकाम और बुखार जैसे रोग तो सेकंडों में ठीक हो जायेंगे! लेकिन इन चमत्कार के दावों पर इसलिए भी यकीन करना मुश्किल है कि इनकी कभी कोई चिकित्सीय व्याख्या नहीं की जा सकती और इन्हें चमत्कार मानने का आधार बस आस्था होती है। ऐसे में महज अंधविश्वास के आधार पर किसी बात को चमत्कार मानकर किसी को संत की उपाधि देना खुद-ब-खुद सवालों के घेरे में आ जाता है।.....

जाती थी। तब उनके अरबों रुपये के खजाने से धेला भी बाहर नहीं निकलता था। भारत में सैकड़ों बार बाढ़ आई, भोपाल में भयंकर गैस त्रासदी हुई, इस दौरान टेरेसा ने मदर मैरी के तावीज और क्रश्वस तो खूब बांटे, लेकिन आपदा प्रभावित लोगों को किसी भी प्रकार की कोई फूटी कोड़ी की सहायता नहीं पहुंचाई।

आज भले ही मदर टेरेसा, सेकुलर मीडिया के एक बड़े वर्ग द्वारा घोषित त्याग एवं सेवा की प्रतिमूर्ति हो। उनकी बनाई संस्था निर्मल हृदय का गुणगान करती हो, परन्तु कुछ दिन पहले जब इस संस्था की काली करतूत खुली तो मीडिया का एक बड़ा धडा गायब मिला था। क्योंकि कहने को यह संस्था जरूरतमंद परिवारों को नवजात शिशु बेचती है किन्तु 2015 से जून 2018 के बीच निर्मल हृदय में 450 गर्भवती महिलाओं को रखा गया। जिनमें मात्र 170 नवजातों को बाल कल्याण समिति के सामने प्रस्तुत किया गया, शेष 280 शिशुओं का इस संस्था ने क्या किया, इसके बारे में कोई जानकारी नहीं मिली थी। न किसी ने पूछने का साहस किया न किसी ने बताने की जरूरत समझी। जबकि ऐसे कितने सवाल हैं, जो कभी पूछे ही नहीं गए।

हाँ गरीबों के बीच काम करने वाली टेरेसा परिवार नियोजन के विरुद्ध थीं। टेरेसा ने जिन भारतवासियों से प्यार का दावा किया, उनकी संस्कृति, उनकी समृद्ध विरासत की प्रशंसा में उन्होंने कभी एक शब्द तक नहीं कहा। 1983 में एक हिन्दी पत्रिका को दिए गए इन्टरव्यू में जब टेरेसा से पूछा गया कि ईसाई मिशनरी होने के नाते क्या आप एक गरीब ईसाई और दूसरे गरीब गैर ईसाई के बीच भेदभाव करती हैं? तो उनका उत्तर था, मैं तटस्थ नहीं हूं। मेरे पास मेरा मजहब है और मेरी प्राथमिकता भी मेरा मजहब है। किन्तु दुर्भाग्य है कि हमारा मीडिया इन जवाबों पर कभी प्रश्न नहीं उठाता, न ही तर्कवादी ऐसे उत्तरों पर कोई सवाल खड़े करते हैं। इसी का नतीजा है कि वेटिकन द्वारा भारत में ईसाई मिशनरीज के कार्यों को प्रोत्साहन देने के लिए धड़ाधड़ संत की उपाधियाँ बांटी जा रही है।

– *सम्पादक*

दयानन्द सेवाश्रम बांसवाड़ा, दयानन्द विद्यालय भामल एवं महाशय धर्मपाल गुरुकुलम् बामनिया का निरीक्षण

परिश्रम और पुरुषार्थ से मिलती है सफलता – विनय आर्य

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा देश के विभिन्न राज्यों में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ पिछले 50 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व सेवा कार्य किया जा रहा है। अभी पिछले दिनों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी मध्यप्रदेश के बामनिया, झाबूआ तथा भामल में नव निर्माणाधीन छात्रावासों का निरीक्षण करने हेतु

– शेष पृष्ठ 8 पर

11 से 13 अक्तूबर 2019, काशी में आयोजित
स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन के ऐतिहासिक विहंगम दृश्य, प्रेरक चित्र एवं मनोहारी संक्षिप्त झलकियां

उद्घाटन से लेकर भव्य समापन समारोह तक की एक अदभुत प्रेरणाप्रद यात्रा

दीप प्रज्वलित करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के साथ डॉ. आचार्य देवव्रत जी, श्री गंगाप्रसाद जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री धीरज सिंह आर्य जी, स्वामी धर्मेश्वरानंद जी एवं अन्य महानुभाव

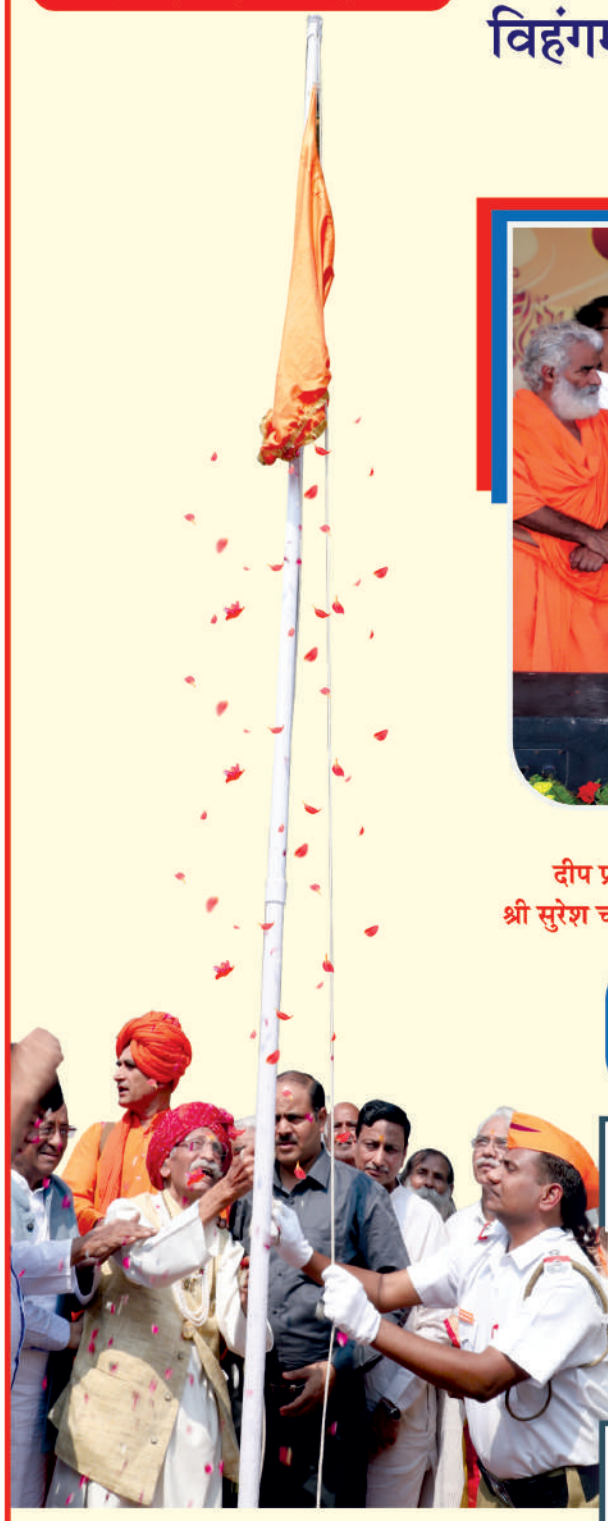

ध्वजारोहण करते हुए पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सतीश चड्डा जी एवं अनेक अन्य महानुभाव

वैदिक धर्म महासम्मेलन के अवसर पर सारगर्भित एवं प्रेरणाप्रद उद्बोधन देते हुए विशिष्ठ महानुभाव

डॉ. आचार्य देवव्रत जी

श्री गंगा प्रसाद जी

श्री सुरेश चंद्र आर्य जी

स्वामी सुमेधानंद जी

श्री प्रकाश आर्य जी

श्री धर्मपाल आर्य जी

डॉ. स्वामी देवव्रत जी

साध्वी डॉ. उत्तमा यति जी

श्रीमती मृदुला जायसवाल जी

स्वर्ण शताब्दी वैदिक

वैदिक धर्म महासम्मेलन के अवसर पर स्वाध्याय के संकल्प के साथ महत्वपूर्ण पुस्तकों का विमोचन करते महाशय धर्मपाल जी, डॉ. आचार्य देवव्रत जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री गंगाप्रसाद जी, श्रीमती मृदुला जायसवाल जी एवं अनेक अन्य महानुभाव

यज्ञ का विहंगम दृश्य

उद्‌बोधन.....

स्वामी प्रणावानंद जी

स्वामी धर्मेश्वरानंद जी

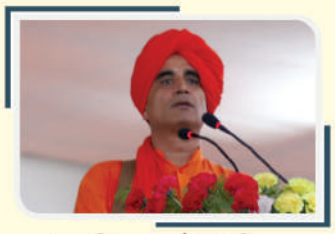

स्वामी सम्पूर्णानंद जी

ब्र. मुकुंदानंद जी

ठाकुर विक्रमसिंह जी

डॉ. विनय विद्यालंकार जी

आचार्या चर्तुवेदा जी

डॉ. ज्वलंत कुमार जी

स्वामी स्वदेश जी

श्री धीरज सिंह आर्य जी

आचार्या प्रियंवदा जी

श्री भद्रकाम वर्णी जी

डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार जी

श्री अशोक आर्य जी

वैदिक विद्वान

आर्य संन्यासी

स्वामी विदेह योगी जी

श्री शिवदत्त पांडेय जी

श्री ज्ञानेंद्र गांधी जी

आर्य बालक

आर्य समाज द्वारा आयोजित

धर्म महासम्मेलन

वैदिक धर्म महासम्मेलन में भव्य मंच का विशाल दृश्य तथा मंच पर भावपूर्ण प्रस्तुतियां देते हुए गुरुकुलों की छात्राएं

सम्मेलन में पधारे विशिष्ठ महानुभावों के प्रति स्वागत एवं सम्मान की झलकियां

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी

आचार्य देवव्रत जी

श्री सुरेश चंद्र आर्य जी

श्री गंगाप्रसाद जी

ठाकुर विक्रम सिंह जी

श्री प्रमोद आर्य जी

श्री विनय आर्य जी

श्री महेंद्र मोदी जी

श्री दिनेश आर्य जी

डॉ. धीरज सिंह आर्य जी

श्री सतीश चड्डा जी

श्री अर्जुनदेव चड्डा जी

श्री बलदेव सचदेवा जी

श्री सुरिन्द्र चौधरी जी

श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी

श्री राजू आर्य जी

श्री मुकेश आर्य जी

स्वामी सदानन्द जी

श्री व्यास नंदन जी

श्री शिव कुमार मदान जी

आचार्य सुभाष जी

आचार्या नंदिता जी

श्रीमती मृदुला जायसवाल

श्रीमती देववत जी

आर्य महानुभाव

स्वामी सदानन्द जी

आर्य महानुभाव

स्वामी स्वदेश जी

साध्वी उत्तमा यति जी

काशी शास्त्रार्थ पर आधारित एवं अन्य प्रेरक विषयों पर नाटक मंचन करते हुए आर्य गुरुकुलों के छात्र-छात्राएं

13 अक्तूबर 2019 समापन समारोह

काशी में आर्य समाज की ऐतिहासिक शोभायात्रा का विशाल दृश्य

सम्मेलन स्थल से काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल आनंद बाग तक आर्य समाज और ऋषि दयानन्द की जय जयकार से गूंज उठी काशी नगरी

शोभायात्रा का नेतृत्व करते दिल्ली सभा के प्रधान, श्री धर्मपाल आर्य जी सहित अनेक सभाओं के अधिकारी एवं आर्य संन्यासी

महासम्मेलन में महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु

तीन दिनों तक लगातार अपने मधुर भजनों से आर्य जनों को ऋषि भक्ति का संदेश देने वाले आर्य जगत के सम्मानित भजनोपदेशक

तीन दिवशीय महासम्मेलन के समापन समारोह का विहंगम दृश्य

प्रथम पृष्ठ का शेष

धन्य है तुझको ऐ ऋषि तूने हमें बचा लिया,
सो-सो के लुट रहे थे हम तूने हमें जगा दिया।

आर्य समाज निरंतर विकसित और विस्तृत होता जा रहा था। मानव समाज में सच्ची श्रद्धा-विश्वास और आस्था पनप रही थी। महर्षि के वैदिक विचारों, मान्यताओं और सिद्धांतों के सूर्य की किरणें देश-काल तथा मत-संप्रदायों की सीमाओं को लांघकर मानव मात्र के लिए आदर्श स्थापित कर रही थी। ऋषि की सेवा-साधना और तपोबल से केवल बहुसंख्यक हिंदू समाज ही नहीं वरन् मुसलमान और ईसाई भी सुमार्ग पर चलने को आतुर थे। मानव समाज एक नए युग परिवर्तन की ओर अग्रसर था। ऋषिवर की प्रेरणा के प्रताप से चारों तरफ नया उमंग-उत्साह और उल्लास था। और क्यों न हो उमंग? क्यों न हो उत्साह और उल्लास?

हर युग की एक आस होती है
हर युग की एक प्यास होती है
हर युग में एक मसीहा आता है
जो विष पीकर अमृत बरसाता है
वही महर्षि दयानन्द कहाता है।।

ऋषि दयानंद मानव मात्र के लिए एक मसीहा बनकर आए थे। उन्होंने संपूर्ण मानव जाति को अपने उपकारों से उपकृत किया। स्वयं का स्वयं से परिचय कराया, सिर उठाकर जीना सिखाया, भक्त और भगवान के बीच जो ढोंग-पाखंड और आडंबर अवरोध बनकर खड़े थे, उन्हें वैदिक ज्ञान से दूर भगाया। मानव समाज के दु:ख पीड़ा और संतापों को अपने कोमल हृदय में महसूस किया, सबको सुख-शांति -समृद्धि और कल्याण का मार्ग दिखाया। किंतु जैसा कि आलेख के प्रारंभ में लेखक ने निवेदित किया है इस द्वंद्वमय संसार में घटनाओं के प्रवाह में भी विरोधी द्वंद्व

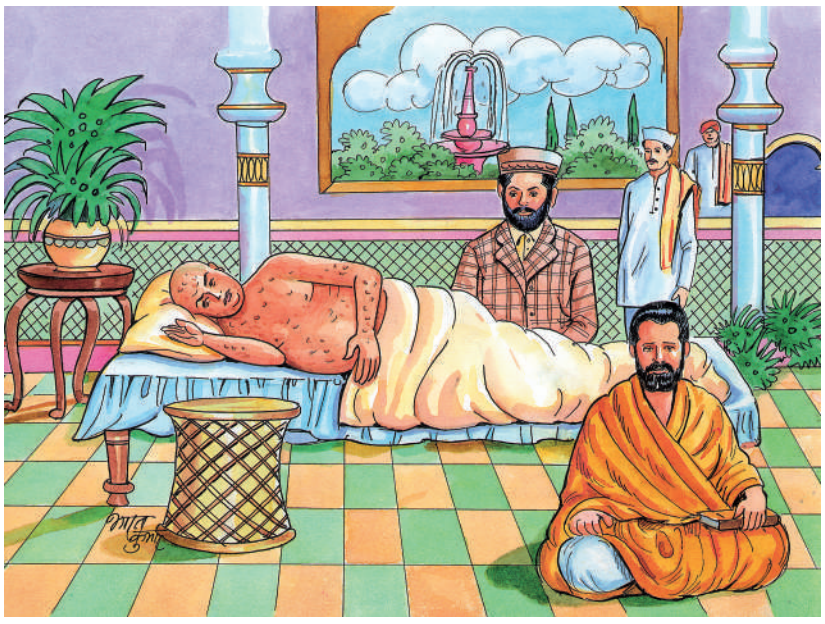

साथ-साथ चलता है। ऋषिवर मानव समाज के उद्धार के लिए समर्पित होकर सतत् परोपकार में संलग्न थे।

"ऋषिवर देव दयानंद न पैगंबर थे,
न अवतार,
साधारण मानव के रूप में किया
समाज सुधार।

ऋषिवर ने अपने जीवन काल में संसार का उपकार करने के लिए 14 बार जहर पिया, लेकिन इस बार उनके रसोइए ने ऐसा घातक वार किया कि ऋषिवर समझ गए कि यह कालकूट विष है और उन्होंने अपने हत्यारे को अभयदान देते हुए बस यही कहा कि अभी मेरा बहुत सा कार्य अधूरा है। ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। ऋषि दयानंद इन्हीं मार्मिक शब्दों के साथ 136 वर्ष पूर्व दीवाली के दिन देह त्याग कर अमर हो गए। ऋषिवर की इस अमरता पर संपूर्ण मानवता को गर्व है।ऋषिवर के निर्वाण दिवस पर संपूर्ण मानव जाति और आर्य समाज को यह संकल्प अवश्य लेना चाहिए कि दीवाली पर दिए तो जलाएं, अज्ञान अविद्या के अंधेरों को भी हम दूर भगाएं। किसी कवि ने कहा है-

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
धरा पर अंधेरा कहीं रह न पाए

ऋषि दयानंद के वे शब्द कि "मेरा बहुत-सा कार्य अधूरा रह गया है" सबके लिए प्रेरणा और संकल्प का सबक है। हमें ऋषि के कार्यों को पूर्ण करने हेतु त्याग-तपस्या, सेवा-साधना, समर्पण, स्वाध्याय, सत्संग आदि शुभकर्मों का संकल्प लेकर ऋषि निर्वाण दिवस को साकार करने का प्रयास करना चाहिए। 31 अक्तूबर 1883, ई. को अजमेर के श्मशान घाट पर जब ऋषिवर का शव लाया गया तो उस समय कहा जाता है कि उनके पार्थिव शरीर के साथ 50-60 व्यक्ति से अधिक नहीं थे। लेकिन उसके बाद जब भी कहीं आर्यों का मेला लगता है तो ऋषि के चाहने वाले लाखों की संख्या में होते हैं। स्वर्ण जयंती पार्क रोहिणी में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 इस इस तथ्य का सशक्त प्रमाण है कि आर्यजन ऋषि के कार्यों को पूर्ण करने हेतु लाखों-लाखों की संख्या में संपूर्ण विश्व में अलख जगा रहे हैं। ऋषिवर के 136वें निर्वाण दिवस पर आओ मिलकर संकल्प करें-

ऋषि के मिशन को पूरा करेंगे,
ऋषि के स्वप्न को पूरा करेंगे,
ऋषिवर तेरी अमर कहानी,
खोज रही अपनी कुर्बानी
जलन एक जिनकी अभिलाषा,
मरण एक जिनका त्यौहार
नमन तुम्हें ऋषि सौ-सौ बार,
नमन तुम्हें ऋषि सौ सौ-बार।।

- आचार्य अनिल शास्त्री

आर्यसमाज हनुमान रोड के वार्षिकोत्सव पर

वैदिक सत्संग

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर वैदिक सत्संग के आयोजन में यजुर्वेदीय यज्ञ, भजन, प्रवचन आदि कार्यक्रम 30 अक्तूबर से 3 नवम्बर, 2019 तक होंगे। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य इन्द्रदेव शास्त्री जी तथा भजन श्री जितेन्द्र आर्य के होंगे। इस अवसर पर महिला सम्मेलन एवं भाषण प्रतियोगिता के अन्य अनेक कार्यक्रम होंगे। समापन समारोह 3 नवम्बर को होगा।

-विजय दीक्षित, मन्त्री

आर्यसमाज जे.जे. कालोनी वजीरपुर का

52वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज जे.जे. कालोनी वजीरपुर दिल्ली का 52वां वार्षिकोत्सव समारोह 8-9-10 नवम्बर, 2019 को आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सन्तोष कुमार शास्त्री, भजन श्री नरदेव आर्य जी (भरतपुर) तथा प्रवचन आचार्य अभयदेव शास्त्री जी व आचार्य कुंवरपाल शास्त्री जी के होंगे। समापन समारोह रविवार 10 नवम्बर को प्रात: 8 से 1 बजे तक आयोजित होगा।

-प्रेमपाल शास्त्री, प्रधान

दिव्य गौशाला गढ़मिरकपुर सोनीपत में नवनिर्मित यज्ञशाला के उद्घाटन पर

सामवेद पारायण यज्ञ

दिव्य गौशाला गांव गढ़मिरकपुर, सोनीपत-मेरठ रोड, हरियाणा में नव निर्मित यज्ञशाला के उद्घाटन के अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन 8-9-10 नवम्बर, 2019 को किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य नरेदव जी के भजन होंगे आप सब सादर आमन्त्रित हैं। *- आचार्य धूमसिंह शास्त्री*

शोक समाचार

श्री मुकेश पंवार जी को मातृशोक

आर्यसमाज यमुना विहार, दिल्ली के मन्त्री श्री मुकेश कुमार पंवार जी की पूज्या माताजी श्रीमती अंगूरी देवी जी का दिनांक 13 अक्तूबर, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ कर्दमपुरी निकट मौजपुर मैट्रो स्टेशन शमशान घाट पर हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 22 अक्तूबर को जांगिड सत्संग भवन यमुना विहार में सम्पन्न हुई जिसमें उनके निजी परिवार के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री ओम प्रकाश आर्य जी का निधन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के मन्त्री, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कोषाध्यक्ष एवं आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिम के वरिष्ठ सदस्य श्री योगेश आर्य जी के चाचाजी श्री ओमप्रकाश आर्य जी का 15 अक्तूबर, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 16 अक्तूबर को पंजाबीबाग शमशान घाट पर हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 अक्तूबर को आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिम में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थानों के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

8 साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 21 अक्तूबर, 2019 से रविवार 27 अक्तूबर, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24-25 अक्तूबर, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 अक्तूबर, 2019

आर्य समाज विदिशा

१०० शताब्दी वर्ष १९१८-२०१८

स्वामी श्रद्धानन्द पथ, विदिशा (म.प्र.) ४६४००१
(मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध)
-: स्थापना का 101 वाँ वर्ष :-

शताब्दी समारोह

दिनांक ९,१०,११ एवं १२ नवम्बर २०१९ (शनिवार से मंगलवार)
तदनुसार कार्तिक शुक्ल १२,१३,१४,१५ विक्रमी संवत् २०७६

समारोह स्थल : विनायक बैंक्युट हॉल परिसर, स्वर्णकार कॉलोनी, विदिशा, मध्यप्रदेश, भारत

चार दिवसीय समारोह में आप सभी इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं। कृपया अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें। आगंतुक महानुभावों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की जावेगी।

निवेदक

सीताराम आर्य, संरक्षक, संयोजक, शताब्दी समारोह
विश्वेन्द्र आर्य, मन्त्री, आर्य समाज, मो. 09425652882
सूर्य प्रकाश मीणा (पूर्व मन्त्री म.प्र. शासन), अध्यक्ष, स्वागत समिति
श्रीमती राजेश श्रीवास्तव, प्रधान, महिला आर्य समाज
जयप्रकाश आर्य, प्रधान, आर्य समाज, मो. 9827272151

विशेष : 'विदिशा'-म.प्र. की राजधानी भोपाल से सड़क मार्ग से 55 कि.मी. व भोपाल अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा से 60 कि.मी. दूर, दिल्ली-मुम्बई रेल खण्ड पर बीना-भोपाल के मध्य स्थित रेलवे स्टेशन जिला मुख्यालय है।

॥ ओ३म्॥
विद्ययाऽमृतमश्नुते
श्रीमद्दयानन्द-वैदिक-गुरुकुल-परिषद्
द्वारा आयोजित
अखिल-भारतीय-गुरुकुलमहोत्सव

- द्वितीय-वैदिक-गुरुकुलीय-शास्त्रीय-प्रतिस्पर्धा
- अखिल-भारतीय-वेदाङ्ग-शोधसङ्गोष्ठी
- अखिल-भारतीयगुरुकुल-अधिवेशन
- सांस्कृतिक-कार्यक्रम
- मानवसेवाप्रतिष्ठान द्वारा अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह
- वैदिकसिद्धान्तपरीक्षा-उपाधि-वितरण

दिनाङ्क - 8, 9, 10 नवम्बर 2019 (कार्तिकसुदी, एकादशी-त्रयोदशी, वि.सं.- २०७६)
स्थान - श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)
चलभाष - 9411106104, 7900656649

प्रतिष्ठा में,

खुशखबरी! खुशखबरी!!
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2020 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

पृष्ठ 2 का शेष

पहुंचे। ज्ञात हो कि पिछले 50 वर्षों से दयानंद सेवाश्रम संघ वहां छोटी-छोटी बालवाड़ी निर्मित कर कक्षा 5 तक बच्चों को शिक्षा एवं संस्कार देता आ रहा है। उन बच्चों को आगे चलकर स्कूल और कॉलेज के रूप में भी शिक्षा के साथ-साथ संस्कार मिले। इस भावना को ध्यान में रखते हुए महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आर्य विद्या निकेतन बामनिया, झाबुआ प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। वहां हजारों बच्चे आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को भी अपना रहे हैं। इस श्रृंखला में बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु वहां बामनिया और झाबुआ में नए छात्रावासों का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। श्री विनय आर्य जी और जोगेंद्र खट्टर जी ने निर्माणाधीन भवनों का पूरा निरीक्षण किया और दिशा निर्देशन भी दिया।

इस अवसर पर बामनिया, झाबुआ में स्थित महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानंद आर्य विद्या निकेतन के प्रांगण में जब दिल्ली सभा के महामंत्री विनय आर्य और दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगेंद्र खट्टर जी पहुंचे तो विद्यार्थियों ने तिलक लगाकर एवं पीत वस्त्र पहनाकर दोनों महानुभावों का स्वागत किया। श्री विनय आर्य जी ने बच्चों को संबोधित करते हुए अपने संदेश में उन्हें सफलता के सूत्र भी प्रदान किए। श्री विनय आर्य जी ने बच्चों को कहा कि जीवन में सफलता के लिए कठिन परिश्रम करना अत्यंत आवश्यक है। परिश्रम और पुरुषार्थ के बिना जीवन में सफलता एक सपना ही बनकर रह जाती है। विनय आर्य जी ने कई प्रेरक उदाहरण देकर और प्रश्नोत्तर के माध्यम से बच्चों को कम्पीटिशन में सफलता की बात भी बताई। बच्चों के द्वारा मंत्र पाठ और कई प्रेरक प्रस्तुतियां भी दी गईं।

इन्हें कौन नहीं जानता!

इनके जीवन की हकीकत जानिये कहानी उन्हीं की जुबानी

इनके जीवन को नई दिशा दिखाने वाले सफलता प्राप्ति के मूलमंत्र

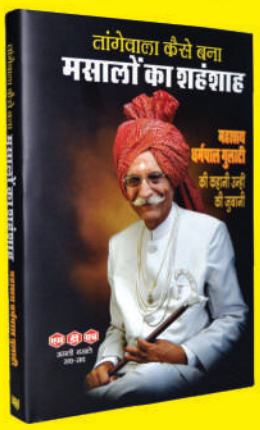

मूल्य: रु0: ~~325/-~~ 150/- पृष्ठ: 240/-

नई दिल्ली से कुतुबरोड़ तक एक तांगा चलाने वाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

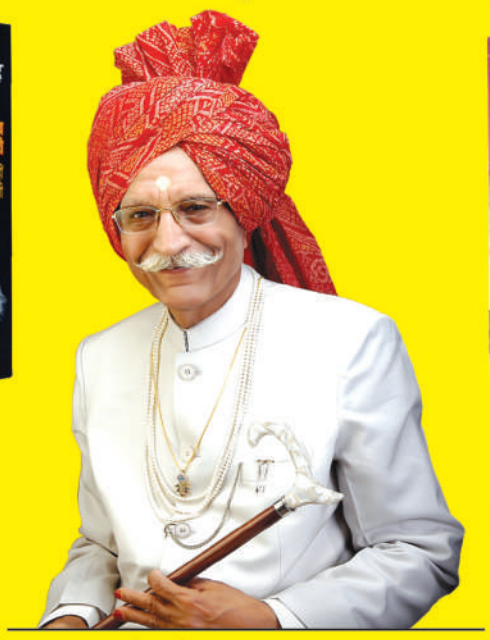

मूल्य: रु0: ~~350/-~~ 200/- पृष्ठ: 168/-

इस पुस्तक का एक-एक अध्याय आपके जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

(चेयरमैन, एम.डी.एच. ग्रुप)

"मैंने जिस तरह कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करके सफलता प्राप्त की है वह लोगों के लिए भी मार्गदर्शक साबित हो सकती है।

आप इन किताबों को पढ़ें और मुझे अपने विचार लिख भेजें। आपके पत्र की प्रतीक्षा में"

MDH असली मसाले सच-सच
महाशय धर्मपाल

-: पुस्तक मंगाने के लिए कृप्या लिखें अथवा फोन पर सम्पर्क करें :-

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह